INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

डॉ नीरजा माधव के उपन्यास " यमदीप" में उपभोक्ता संस्कृति का प्रभाव

शोधार्थी : श्रीमती अल्का शुक्ला

निर्देशन: डॉ. आँचल श्रीवास्तव

सी.व्ही.रमन वि.वि.कोटा,करगीरोड़

सार:-

आधुनिकता,पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण, सामंती मानसिकता, एवं सामाजिकस्थिति को सुदृढ़करने की होड़ एवं विज्ञापन और मीडिया के बढ़तेउपयोग के कारण उपभोक्ता संस्कृति ने अपनापरचम सारे विश्व में लहरा दिया। उपभोक्ता संस्कृति का अर्थ है भौतिक वस्तुओंका अधिग्रहण और उसका निरंतर उपयोग करना। आज भूमंडलीयकरण के दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सारा विश्व बाज़ार के रूप में स्थापित हो गया है। इसका प्रभाव समाज, साहित्य, सिनेमा, मीडिया, सभी क्षेत्रो में देखा जाता है।मानवीय संबंधो, भावनाओंएवं संवेदनाओंपर भी बाज़ार हावी है। साठोत्तरी युग की साहित्यकार डॉ.नीरजामाधव का उपन्यास "यमदीप" उपभोक्ता संस्कृति की गहन आलोचना प्रस्तुत करता है।डॉ. नीरजा माधव के उपन्यासों में मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता को जनमानस के मन में स्थापित करने का भरसक प्रयासकिया गया है। यह उपन्यास आधुनिक समाज की मानसिक स्थिति का प्रतीकात्मक चित्रण प्रस्तुत करता है। उपभोक्ता संस्कृति के कारण सामाजिक रिश्तोंमें विघटन, एकाकीपन, जीवनशैली में बदलाव, मानवीय मूल्यों का विघटन, पारंपारिक मूल्यों का क्षरणस्पष्ट प्रतीत होता है। आज का मानव भौतिक सुखो को ही सर्वोपरि और प्रतिष्ठा का प्रतीक समझता है, उपभोक्ता संस्कृति ही आधुनिक युग में समाज की पहचान बन गयी है ।वैश्वीकरण, औद्योगीकरण एवं पूंजीवादी अर्थव्यवस्थामें मनुष्य की आवश्यकताओं का स्थान उसकी असीम इच्छाओंने ले लिया है। यमदीप उपन्यास में भौतिकतावाद की प्रधानता, आत्म विस्थापन की समस्या, समकालीन प्रासंगिकता मीडिया, ब्रांड संस्कृति और प्रदर्शनकी मानसिकता को उजागर करता है ।यमदीप उपन्यास में उपभोक्ता संस्कृति मनुष्य की पहचान,रिश्तोंऔर मूल्यों को नष्ट कर रही है ।नीरजा माधव ने इस उपन्यास के माध्यमसे आधुनिक समाज को आईनादिखाती है और आत्म मंथन के लिए प्रेरित करती है।

बीजशब्द: बाजारवाद, उपभोक्ता संस्कृति, वैश्वीकरण, औद्योगीकरण, पूंजीवाद एवं आधुनिकता, भौतिकतावाद।

प्रस्तावना:-

उपभोक्ता संस्कृति की शरूआत औद्योगिक क्रांति से हुई। बड़े-बड़े उद्योगो की स्थापना से बड़े पैमाने पर उत्पादन होने लगा। उत्पादन में वृद्धि से वस्तुएँ सरलता से सस्ते रूप में उपलब्ध होने लगी। जिससे उपभोग की प्रवृति में विस्तार होने लगा। वैश्वीकरण के कारण अन्तर्राष्ट्रीय,ब्रांड, फैशन और जीवन शैली एक देश से दूसरे देश में पहुँचने लगी जिससे उपभोक्ता संस्कृति का तेजी से विस्तार हुआ। अत: उपभोक्ता संस्कृति एक ऐसा सामाजिक ढाँचा है जहाँ वस्तुओं और सेवाओं की खरीद और उपभोग व्यक्तियों और समुदायों की आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक प्रथाओं का केन्द्र बिंदु है। ई.बी.टायलर के अनुसार:-" उपभोक्ता संस्कृति वह जीवन पद्धति है जिसमें व्यक्ति की आवश्यकताएँ, रूचियाँ और मूल्य वस्तुओं के उपभोग के माध्यम से व्यक्त होते हैं। उपभोक्ता संस्कृति में वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करना ही व्यक्ति की पहचान और जीवन शैली का महत्वपूर्ण आधार है। मैनेजर पाण्डेय के अनुसार:- पश्चिम के उपभोक्तावादी समाज और मुक्त बाजार की व्यवस्था में मनुष्य और संस्कृति की दुर्गति की और संकेत करते हुए आक्टोवियो पांज ने लिखा है:- "जिस समाज में अधिक उपभोग के लिए अधिक से अधिक उत्पादन का उन्माद बढ़ता है, वह विचारों,भावनाओ,प्रेम, चीज़ मित्रता और मनुष्य को भी उपभोग की वस्तु बना देता है। वहाँ हर चीज़ खरीदी जाती है, उसका उपभोग होता है, और अंत में वह कूड़ेदान में फेंक दी जाती है"1। "उपभोक्ता संस्कृति का आधुनिकता के दौर में अत्यधिक विस्तार हुआ है आधुनिक युग में यह समाज की

पहचान बन गयी है। आज के इस पूंजीवादी,वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण अर्थव्यवस्था ने मनुष्य की आवश्यकताओं को असीम इच्छाओं में बदल दिया है। आज मानव का मूल्य उसकी जीवन शैली और उसके उपभोग के स्तर से मापा जाता है।

समकालीन हिन्दी उपन्यास सामाजिक यथार्थ, बदलते जीवन मूल्यों और उपभोक्तावादी मानसिकता के गहन विश्लेषण का माध्यम बन गया है। अत्यधिक उपभोग की प्रवृत्ति ने मानव को असंवेदनशील और मानवताहीन बना दिया है। साहित्य समाज का दपर्ण है साहित्यकार समाज का प्रतिबिम्ब अपने साहित्य के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है तथा समाज को मानवता की रक्षा और नैतिकता के पतन से बचाने के लिए प्रतिबद्ध रहता है। समाज को सही दिशा और सत्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित भी करता है। ऐसे ही साठोत्तरी युग के उपन्यासकारो में डॉ नीरजा माधव का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। डॉ नीरजा माधव ने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलायी| वे एक उपन्यासकार, निबंधकार,नाटककार एव कवियत्री भी है। डॉ. नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' किन्नर विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श एव शोषित वर्ग के अनछुए पहलुओं के उजागर करने के साथ-साथ समाज की जटिलताओ और विडंबनाओं को गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों में बाजारवादी व्यवस्था, शहरी एव ग्रामीण जीवन,अकेलापन,नैतिक संकट और संवेदनहीनता प्रमुख विषय उभर कर आते है।

प्रस्तुत शोध का उदेश्य' 'यमदीप' उपन्यास के माध्यम से उपभोक्ता संस्कृति के समाजिक,सांस्कृतिक एव नैतिक प्रभावों का विश्लेषण करना तथा यह समझने का प्रयास करना किस प्रकार उपभोगतावाद मनुष्य को संबंधहीन, अकेला, मूल्यविहीनता के कागार पर लाकर खड़ा कर दिया है। डॉ.नीरजा माधव इससे निपटने का मार्ग भी प्रशश्त करती है। डॉ.नीरजा माधव लिखती है:- "इस अंधेरे से बचने बचाने के लिए 'यमदीप'आपके हाथो में है घर से घूर तक की असंगतियो को दिखाने और वापसी के लिए मार्ग को अलोक में भरते हुए। सूर्य पुत्र के सत्य को भी दीप दिखाने वाली संस्कृति की ओर लौटाना जीवन है। जीवन अबाध है म्रत्यु एक पड़ाव| आइये जीवन की ओर चले। जीवन संस्कृति से जुड़े।"2 'यमदीप' उपन्यास में उपभोक्तावाद के विभिन्न आयायों का चित्रण मिलता है उपभोक्ता संस्कृति ने मानव के हर में प्रवेश कर लिया है| कृत्रिमता एव दिखावे की संस्कृति स्पष्ट परिलक्षित होती है । 'नंदरानी' जो इस उपन्यास की प्रमुख पात्र है उसकी वेशभूषा का वर्णन करते हुए लेखिका कहती है:- "आसमानी रंग के कीमती सलवार सूट पर कश्मीरी कढाई में सफेद और गुलाबी रेशम के बेल-बूटे बने थे हाथो में सफेद रंग के बड़े-बड़े कड़े और कड़ो के बीच में दर्जनों गुलाबी चूडियाँ। कानो में लंबे लंबे झुमके और समीज के गहरे गले में झाँकती नन्ही घाटियों पर लटकती मोटी सी चेन। गोरे रंग की नाजबीबी ने बालों को सिर के ऊपर लपेट कर जूड़ा का आकार दे दिया था, और भोहे तना होठों को गहरे कृत्रिम रंगों से और अधिक 'भड़कीला' बना लिया था"3। कपडे,वस्तुएँ, सोंदर्य प्रसाधन की वस्तुएँ आभूषणों पर उपभोग की प्रवृति हावी है। व्यक्ति आवश्यकता के लिए नहीं अपितु समाज में दिखावा करने के लिए वस्तुओं का उपभोग करता है। उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण संबंधो का बाजारीकरण हुआ है। 'यमदीप' उपन्यास में संबंधो का बाजारीकरण स्पष्ट परिलक्षित होता है संबंध भावनात्मक नहीं अपितु स्वार्थ और लेन-देन,लाभ-हानि के आधार पर संचालित होते है। सामाजिक,पारिवारिक एवं निजी संबंधो पर भी बाजारीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। प्रेम,मित्रता,पारिवारिक संबंध व्यक्ति की उपयोगिता तक सीमित है,उपयोगिता समाप्त होते ही संबंध भी विच्छेद हो जाता है। इस उपन्यास में नंदरानी का भाई नंदन भी नंदरानी को फ़ोन करने से मना करते हुए कहता है:- "देखो तुम्हारा बार-बार टेलीफोन करना या इस परिवार से संबंध रखना हमारी इज्जत तो बढ़ाता नहीं उलटे तुम्हे भी दुःख होता है और मम्मी-पापा को भी। तुम परिवार में रह नहीं सकती,हम रख भी नहीं सकते| इसलिए यह समझ लो कि तुम अनाथ हो| कोई नहीं तुम्हारा इस दुनिया में।"4 इस प्रकार सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए वह अपनी बहन नंदरानी से भी संबंध विच्छेद करने के लिए कहता है। पारिवारिक संबंधो को भी मानव अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए त्याग देता है। उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण उत्सवो,पर्वो का बाजारीकरण हुआ है किन्नर समाज परम्परागत रूप से बच्चे के जन्म और शादी में बधाई गाकर अपना जीवन यापन करता था 'यमदीप' उपन्यास में यह दिखाया गया है की कैसे परम्पराओं के प्रदर्शन में दिखावे की संस्कृति बढ़ी है। समाज में अपने सामाजिक स्तर दिखाने के लिए किन्नरों को बुलाकर मंहगे उपहार व मूल्यवान वस्तुएँ उपहार में दिया जाता है। आधुनिकता एवं भौतिकवाद ने बाजार को सपनो का सौदागर बनाकर लोगो को भौतिक सुख सुविधाएँ की और धकेला है। लोग अपनी उँची शान भौतिक वस्तुओं के उपभोग को मानते है।'यमदीप' उपन्यास में इसका उल्लेख मिलता है:- "पापा मंत्री है। उनके लिए अच्छा

भोजन,घर,गाड़ी तथा अन्य भौतिक सुख सुविधाएँ हैं और क्या चहिए?"5 बाहरी चमक दमक का भी वर्णन मिलता हैं:- "हॉल के बीचोबीच छत से लटकता टिमटिमाता कीमती फानूस जिसके चार छोटे-छोटे भाई-बंधु हॉल की चारो दीवारों पर जगमागते रहते है|"6 इस प्रकार वस्तुएँ केवल आवश्यकता के लिए नहीं अपितु जीवन शैली व सुख का साधन बन गयी है| भौतिकवादी इस युग में भौतिक वस्तुओं से सुख ही सच्चा सुख प्राप्त होता है।

बाजार ने स्त्री को वस्तु बनाकर उसके सौंदर्य और शरीर के व्यापार को बढ़ाया है। स्त्री का शोषण और भोग की वस्तु बनने की प्रवृति बढ़ी है। 'यमदीप' उपन्यास में इसके बारे में कहा गया है:- "एक सात वर्षीय,बच्ची,जिसे न केवल अधिकारों की बात का पता है और न कर्तव्यों का बोध ही, परंतु सबके बड़ी मानवीय क्रूरता की शिकार|"7 इस संबंध में नीरजा माधव लिखती है:- "स्त्रीत्व की गरिमा से खोखले पड़े अंधेरे हृदयो में वे झांककर देखेगी तो समझ पाएगी कि वहाँ भी मुक्ति के नाम पर मुटठी-भर अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं बचा है।"8 समाज में पुरुषों की कुत्सित मानसिकता, नैतिक अनाचार,मूल्यों का पतन उपभोक्ता संस्कृति के विस्तार का ही कारण है।

उपभोक्तावादी प्रतिस्पर्धा में नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। ईमानदारी संवेदना और मानवीय उत्तरदायित्व जैसे मूल्य उपभोक्तावादी प्रतिस्पर्धा में पीछे छुटते जा रहे है। मनुष्य प्रलोभन में आकर धन और सुविधाओं का सुख प्राप्ति हेतु अपने मूल्यों से समझौता करने लगा है 'यमदीप' उपन्यास में इस बात को प्रकट किया गया है कि किस प्रकार भारतीय जनता कुछ चंद रुपयों या वस्तुओं के प्रलोभन में आकर अपनी वास्तविक पहचान व मूल्यों का क्षरण करती है। मंत्री महोदय का कथन:- "भारत की जनता भेड़ है भेड़ जिधर हाँक दो। हवा बदलते देर नहीं लगती। बस आप सभी लोग अभी से तन,मन,धन से एकजुट हो जाय। अभी पर्याप्त समय हैं चुनाव करीब आ गए है तो बस कहीं किसी मस्जिद पर सुअर का मॉस रखवा देगे। भड़का दो,कही अंबेडकर बस्ती में अंबेडकर की मूर्ति लगवा दो, आ गयी जनता आपकी झोली में|"9 इस प्रकार उपभोक्ता प्रलोभन में आकर अपनी ईमानदारी,सच्चाई जैसे मानवीय मूल्यों को नष्ट कर देता है। उपभोक्ता संस्कृति के बाजार में अपने नैतिक मूल्यों को भी बेच देता है।

विज्ञापन भी उपभोक्ता संस्कृति को बढाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है वस्तुओं को खरीदने का आधार विज्ञापन है न कि उसकी गुणवता। विज्ञापन में विभिन्न वस्तुएँ महंगी और सामान्य व्यक्ति के पहुँच के बाहर रहती है। आकर्षक व लुभावने विज्ञापन के प्रभाव में आकर वस्तुओं को खरीदने के लिए आतुर होता है उपभोक्ता वस्तुओं की बाहरी चमक दमक देखकर आकर्षित होता है और वस्तुओं को उपभोग करने हेतु खरीदता है ब्रांड एव महँगी वस्तुओं के उपयोग से भौतिकवाद को बढ़ावा मिलता है और सामाजिक असमानताएँ उपन्न होती है नीरजा माधव के उपन्यास 'यमदीप' में विज्ञापन का प्रभाव परिलक्षित होता है। जीवन शैली में परिवर्तन आया है लोग गाँव छोड़कर शहर की ओर पलायन और शहर वाले महानगर की ओर पलायन कर जाते है इसका उदाहरण 'यमदीप में मानवी के पिता का कथन: "तुम शहर में जाकर रहना चाहते तो रहो| में मना नहीं करूगाँ। परिवार भी ले जा सकते हो| ले जाओ।"10 उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से सामाजिक जीवन और परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है। उपभोक्ता संस्कृति का सबसे बड़ा खतरा है नैतिकता का अवमूल्यन, संसाधनो का अत्यधिक उपभोग और सामाजिक असमानताएँ। जिससे मानवीय संबंधो में प्रेम,दया, करुणा, ईमानदारी, सादगी, सामंजस्य, रीतिरिवाज,पारम्पराओं का ह्रास हुआ है। पूंजीपति वर्ग द्वारा महंगी वस्तुओं के अत्यधिक उपभोग करने से निर्धन वर्गों में प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न होती है। जिससे पारिवारिक एवं आपकी संबंधो में दूरी बढ़ती जाती है। व्यक्ति,स्वार्थी,एकाकी और अवसाद पूर्ण होता है। डॉ.नीरजा माधव ने उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से उत्पन्न सामाजिक,सांस्कृतिक प्रतिरोधो के विरूद्ध अपने उपन्यास 'यमदीप' के माध्यम से पाठको को जागरूक एव सही मार्गदर्शक बन पथप्रदर्शन किया है। आनंद का कथन:- "दीदी को तो साडी पसंद आयेगी पर निन्नी को सलवार सूट का कपड़ा खरीद देना। पर बहुत ओंपचारिकता में पड़कर अधिक पैसे-वैसे खर्च करने के चक्कर में मत पड़ना।"11 यमदीप उपन्यास में पत्रों के माध्यम से दिखावा एवं अत्यधिक उपभोग की प्रवृति से मुक्त कर सामान्य उपयोगी वस्तुओं के उपयोगिता को अपनाने का संदेश समाज को देता है। यमदीप के पात्र आनंद कुमार कहते है:- "हमें अच्छा लगता है, मीडिया और प्रशासन एक टीम-भावना के साथ काम करे,तो बहुत सारी समस्याएँ उत्पन्न नहीं होगी। लेकिन स्वार्थ-प्रेरित या राजनीति-प्रेरित मीडिया और प्रशासनिक' अधिकारी तो पूरे देश को खाई की ओर धकेल कर ले जा रहे---।इसे रोकना होगा।"12 इस प्रकार वह स्वार्थी,प्रवृति,राजनिति से प्रेरित मीडिया, प्रशानिक,।अधिकारियों के बढ़ते अत्याचारों, भ्रष्टाचारो एवं बुरेकर्मो पर अंकुश

लगाकर समाज को सहयोग की भावना से कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहती हैं। आनंद कहते है:- "पीछे पलटकर देखने में लगता है कि अमुक युग अच्छा था। सद्कर्म-प्रधान था, नैतिक था। क्योंकि इसके विपरीत आचरणो वालो को अगली सदिया कंधो पर ढोती नहीं इसलिए इस युग से भी वर्तमान ही इतना आक्रांत हो सकता है, पर भविष्य सार-सार को चुन लेगा।"13 अर्थात् आने वाले समय में भी सत्कर्म नैतिकता का बोलबाला होगा| भविष्य में पुन: उपभोक्ता संस्कृति का प्रभाव कम होगा। और मानव में मान्यता का गुण पुन: पूर्णरूपेण परिलक्षित होने लगेगा। डॉ नीरजा माधव कहती है:- "जी में आता ही फिर एक बार हो जाना चाहिए प्रलय। ये सारी असभ्यताएँ धरती के नीचे दफ़न हो, आने वाले नए युग के पूरातत्व संक्षेपण के लिए एक बर्बर सभ्यता के अवशेष बन जाना चाहिए।"14 डॉ.नीरजा माधव चाहती है कि यह असभ्य,अनैतिकता से घिरा समाज समाप्त हो जाए, और एक नया युग का आरम्भ हो जिसमें सभ्य और शालीन समाज का जन्म हो। इस प्रकार नीरजा माधव ने अपने उपन्यास 'यमदीप' के माध्यम से उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ते प्रभाव को समाप्त कर बाह्य आडम्बर से मुक्त, सभ्य, शालीन, सादगीपूर्ण ईमानदारी से युक्त, नैतिकता के गुणो से युक्त समाज का संदेश पाठक और समाज को दिया है।"

निष्कर्ष:-

"यमदीप" उपन्यास ने उपभोक्ता संस्कृति के विविध आयामों को उजागर किया है। यह उपन्यास इस दिशा में इंगित करता है कि यदि उपभोक्ता संस्कृति के भयावह परिणाम से बाजार को नहीं बचाया गया तो भविष्य में मनुष्य केवल उपभोक्ता बनकर रह जाएगा। भौतिक वस्तुओं से मानव सुख तो प्राप्त कर सकता है पर शांति नहीं। 'यमदीप' उपन्यास में उपभोक्ता संस्कृति को मानवीय के और नैतिक पतन के रूप में प्रस्तुत किया गया नीरजा माधव आधुनिक समाज को आइना दिखाती है और पाठक को प्रेरित के लिए करती है।

सन्दर्भ सूची:-

- पाण्डेय मैनेजर,आलोचनाओं की सामाजिकता,पृष्ठ स.16
- माधव डॉ. नीरजा,यमदीप, पृष्ठ स.08
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.09
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.82
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.31
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.31
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.55
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.08
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.34
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.176
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.237
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.169
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.215
- माधव डॉ.नीरजा माधव,यमदीप पृष्ठ स.....

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.